E-CONTENT FOR SEMESTER II

व्याख्यात्मकवाद - 2
(INTERPRETIVISM – 2)

BY: SWATI SOURAV
POSTGRADUATE DEARTMENT OF SOCIOLOGY
PATNA UNIVERSITY

बीसवीं शताब्दी में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र (INTERPRETIVE SOCIOLOGY IN TWENTIETH CENTURY)

- बीसवीं शताब्दी में व्याख्यात्मक समाजशास्त्र की परंपरा को आगे चलकर घटनात्मक और नृजातीय-पद्धतिगत परंपराओं के माध्यम से विकसित किया गया।
- इन परंपराओं का केंद्रीय विश्वास यह है कि दुनिया काफी हद तक मनुष्य द्वारा अनुभव की जाने वाली दुनिया है, और सामाजिक विज्ञान का कार्य इस दुनिया का वर्णन करना, समझना और समझाना है: कैसे लोग खुद को परिभाषित करते हैं और इसका निर्माण करते हैं।
- अलफ्रेड शुट्ज़ (1899-1959), घटनात्मक परंपरा के एक प्रमुख प्रस्तावक, ने अन्तः-व्यक्तिपरक दुनिया की बात की, जिसमें लोग प्ररूपण (typification) की प्रक्रिया के माध्यम से एक दूसरे से बातचीत करते हैं, संवाद करते हैं और समझते हैं: एक प्रक्रिया जो लोगों को एक दूसरे को ठीक करने और परिभाषित करने में सक्षम बनाती है, और एक साझा भूमिका-अपेक्षा रखती है।
- यह इस प्ररूपण की प्रक्रिया के माध्यम से है, कि एक सार्थक और स्थिर सामाजिक व्यवस्था संभव है।

To be Cont.

- शुट्ज़ (1972) के लिए रोजमर्रा की दुनिया जिसमें लोग बातचीत करते हैं वह सर्वोपरि वास्तविकता है।
- यह मान लिया गया है। और यही समाज को संभव बनाता है।
- लेकिन फिर, अन्य क्षेत्र भी हैं, जैसे सपनों का क्षेत्र, या वैज्ञानिक सिद्धांत का क्षेत्र, जिसमें लोग दुनिया का अनुभव करते हैं।
- अर्थ के इन सभी परिमित प्रांतों में समय और स्थान की अपनी-अपनी धारणाएँ होती हैं, और एक दायरे से दूसरे में शामिल होना 'झटका' है।
- लेकिन फिर, शुट्ज़ (1972) के लिए, सर्वोपरि वास्तविकता सबसे महत्वपूर्ण है, और हम सभी को इस पर वापस आना होगा और दुनिया को प्रत्यक्ष / वास्तविक अभिनेताओं के रूप में अनुभव करना होगा।
- शुट्ज़ के लिए समाजशास्त्र को यह वर्णन करना चाहिए और समझना चाहिए कि लोग दुनिया का अनुभव कैसे करते हैं।

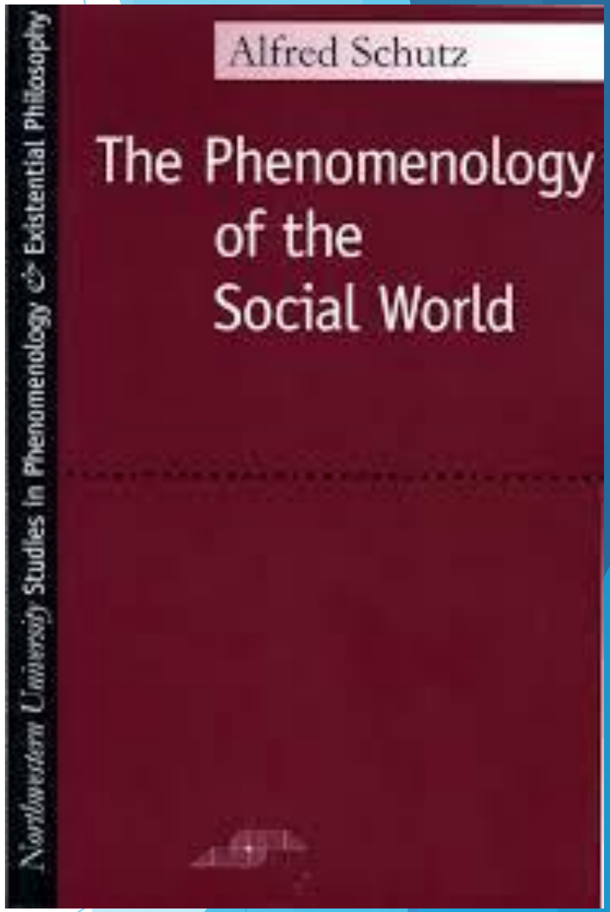

To be Cont.

- इसका अर्थ है कि समाजशास्त्र को लोगों के विवरणों और परिभाषाओं को गंभीरता से लेना चाहिए।
- यह इस अर्थ में है कि समाजशास्त्रीय निर्माण 'दूसरे क्रम के निर्माण' हैं।
- इसी तरह, हेरोल्ड गार्फिंकेल (1967) ने नृवंश-पद्धति (ethno-methodology) या 'लोगों की कार्यप्रणाली' (people's methodology) की बात की थी।
- कार्य यह वर्णन करना है कि कैसे लोग स्वयं अपनी दुनिया को परिभाषित करते हैं, न कि इसे कुछ संदर्भ-मुक्त, सार, सार्वभौमिक सामान्यीकरण के रूप में व्याख्या करने के लिए।
- दूसरे शब्दों में, इन परंपराओं में आप अमूर्त स्पष्टीकरण से सार्थक समझ, सार्वभौमिकता से विशिष्टता तक, सिद्धांत से विवरण तक, संरचनात्मक कारणों से लोगों के जीवन के अनुभवों की एक पारी देख रहे हैं।

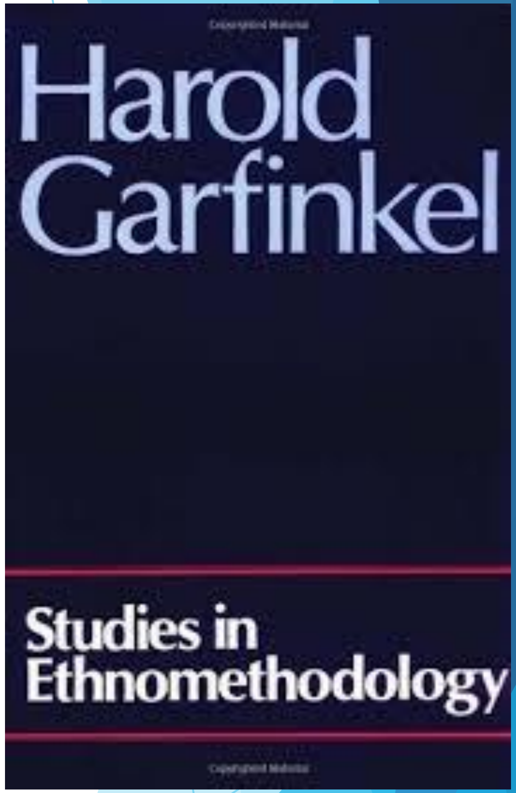

निष्कर्ष (CONCLUSION)

- सामाजिक विज्ञान की दो परंपराएं, प्रत्यक्षवादी और व्याख्यात्मक, अभिसरण का एक बिंदु है, क्योंकि ये दोनों परंपराएं प्रबुद्धता आधुनिकता से बाहर निकली हैं।
- प्रत्यक्षवादी परंपरा में आप वैज्ञानिक व्याख्या की वैधता की पुष्टि को देख सकते हैं।
- और व्याख्यात्मक परंपरा में आप मनुष्यों की एजेंसी पर केंद्रित प्रबुद्धता आशावाद की पुष्टि और उनकी खुद की दुनिया बनाने की क्षमता पा सकते हैं।
- लेकिन ये सभी नींव एक संकट में हैं, क्योंकि इन सभी आधुनिक सिद्धांतों, वैज्ञानिक निष्पक्षता, ऐतिहासिक प्रगति, सुसंगत / तर्कसंगत आत्म, और एजेंसी / अभिनेता की स्वतंत्रता पर संदेह किया जाता है, विशेष रूप से उत्तर आधुनिकता के आगमन के साथ। और इसने एक गंभीर दार्शनिक संकट पैदा कर दिया है, और समाजशास्त्र को इसका सामना करना पड़ा है।
- अगले भाग में हम ज्ञान-मीमांसा के इस नए उभरते विद्यालय के बारे में चर्चा करेंगे, वह है, उत्तर-आधुनिकतावादी।

धन्यवाद